लौहित्य साहित्य सेतु: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 3, संख्या: 4; जनवरी-जून, 2022

मेच्चु

✍ जुन देउरी

असमीया समाज में मनाये जानेवाले जातीय उत्सव 'बिहु' को देउरी संप्रदाय में 'मेच्चु' या 'बिचु' कहते हैं। बिहु नाम सुनते ही मन एक अलग ही आनंद-उल्लास से भर जाता है। देउरी संप्रदाय में बिहु का प्रचलन प्राचीन काल से है। इस संप्रदाय के लोग प्रधानतः तीन प्रकार के बिहु का पालन करते हैं-

१.इबाकुँ मेच्चु (बहाग बिहु)

२. कातिय मेच्चु (काति बिहु)

३. केमाचि मेच्चु (माघ बिहु)

'इबाकुँ मेच्चु' अर्थात् बहाग बिहु देउरी संप्रदाय के लोगों के लिए सबसे बड़ा एवं प्रिय बिहु है। 'इबाकुँ मेच्चु' का स्वागत फाल्गुन महीने से ही प्रारम्भ होता है। फाल्गुन महीने के अन्तिम दिन से ही गाँव के युवक-युवतियाँ सदा रात को अपने 'देगर' (मंदिर) के जेष्ठ पुजारी के घर में नृत्य करते हैं। यह नृत्य 'चिगादागारेवा बिचु' तक किया जाता है। इससे पहले चैत्र महीने के अन्तिम बुधवार को 'थिरी दुबोबा बिचु' मनाया जाता है। देउरी संप्रदाय में जब तक 'थिरी दुबोबा बिचु' नहीं मनाया जाता तब तक बिहु का शुभारंभ नहीं किया जा सकता है। 'थिरी दुबोबा' में गाँव के कुछ पुरुष पुजारी के साथ मन्दिर जाकर मिट्टी में गड्ढे खोदकर 'थिरी' (केले) को उसमें डाल देते हैं और एक हफ्ते बाद अर्थात् वैशाख महीने के प्रथम बुधवार को उसे निकालते हैं और पूजा करके केले को गाँव के सभी घरों में बाँट देते हैं। साथ ही उपास्य देवता से बिहु के शुभारंभ करने के लिए इजाजत लेते हैं। इसी बुधवार को ही 'चिगा दागारेवा बिचु' मनाया जाता है। इसमें गाँव के सभी युवक-युवतियाँ पूरी रात नृत्य करते हैं। सुबह होने से पहले वे एक दूसरे को इस प्रकार से कीचड़ मलते हुए नृत्य करते हैं मानो वे होली खेल रहे हो। इसे 'आदिरी अजजुबा' कहते हैं। इस प्रकार देउरी जनगोष्ठी के लोग बिहु का स्वागत बड़े ही धुमधाम से करते हैं।

इस प्रकार देउरी संप्रदाय में बिहु वैशाख महीने के प्रथम गुरुवार से प्रारम्भ होता है। गुरुवार के सुबह सभी लोग घर के बड़ों से आर्शीवाद लेते हैं और औरतें सफेद वस्त्र परिधान कर पवित्र मन से खाने-पीने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार की चीजें बनाती हैं। इसमें मांस, मछली के साथ 'चुजे' (चावल से बनाए हुए एक मादक द्रव्य) परोसना अनिवार्य होता

है । घर के मुखिया पवित्र वस्त्र परिधान कर सर्वप्रथम बनाई हुईं चीजों को परिवार के मृतकों के नाम लेते हुए घर के पास रख देते हैं । इसे 'मरालेबा' कहते हैं । देउरी समाज में यह प्रचलित है कि मृतकों को परोसने के बाद ही घर के लोग खाना, पानी आदि ग्रहण कर सकते हैं । यह मान्यता है कि यदि कोई जीव दी हुईं चीजों को खाता है तो यह समझा जाता है कि परिवार के मृतक प्रसन्न हुए हैं । 'मरालेबा' के बाद ही बिहु मना सकते हैं । इसके पश्चात् लोग एक दूसरे के घर जाकर चुजे पीते हैं और पूरा दिन ऐसे ही बीतता है । दूसरे दिन से गाँव के युवक-युवतियाँ घर-घर जाकर नृत्य करते हैं । शाम होते ही वे मन्दिर जाकर नृत्य करते हैं । आते समय गीत गाते हुए जेष्ठ पुजारी के घर पहुंचते हैं और वहाँ नृत्य करते हैं । देउरी जनजाति में प्रचलित गीत कुछ इस प्रकार के हैं-

बिचुरे बलिया नमेम अ काइ इगाबा, बिचुरे बलिया नमेम
लाकिया बिचु ह चाजेयाच्चा दुमाया, जायाच्चा के दुमाया जउ ।।

अर्थ: बिहु ने ही दीवाना बनाया है साजन , बिहु ने ही दीवाना किया ऐसे बिहु में बिना गाये कैसे रहे, बिना नाचे कैसे रहे हम ।।

इस प्रकार पूरे एक सप्ताह ऐसा ही चलता है और अगले गुरुवार को 'बिचु उरुआबा' (बिहु की विदाई) मनाते हैं । इसमें लोग सुबह के समय पिठा बनाते हैं और पहले-पहल परिवार के मृत लोगों के नाम रख देते हैं । इसी दिन शाम को गाँव के सभी लोग सफेद वस्त्र पहनकर मन्दिर जाते हैं । वहाँ पूजा करके नृत्य करते हैं । संध्या समय युवक-युवतियों के अलावा सभी लोग घर चले आते हैं । युवक-युवतियाँ देर तक नृत्य करते हैं । वे आते समय गीत गाते हुए जेष्ठ पुजारी के घर पहुंचते हैं और वहाँ नृत्य करते हैं । इसके पश्चात् गीत गाते हुए बिहु की विदाई के लिए निकल पड़ते हैं । इस समय गाँव के लोग अपने-अपने आंगन में आग जलाते हैं और दरवाज़े बन्द करके घर के अन्दर रहते हैं । युवक-युवतियाँ गीत गाते हुए नदी के पास पहुंचते हैं । वे नदी पार करके किसी एक जगह पहुंचकर उसकी चारों ओर तीन बार घूमते हुए वापस चले आते हैं । वापस आते व्यक्त पीछे मोड़कर देखना मना होता है । इससे ही 'बिचु उरुआबा' समाप्त होता है ।

'बिचु उरुआबा' के एक जनप्रिय गीत इस प्रकार का है-

च्चेकु चंग चेरेम ना लेन , च्चेकु चंग चेरेम ना लेन
लाच्छा इगाबा मालेईवा बिचु ना बहरे दाबेकुन जउ ।।

अर्थ: दिल से ही प्यार देंगे, दिल से ही प्यार देंगे इतने प्यारे बहाग बिहु को कैसे विदा करेंगे।।

इसके अगले बुधवार को 'पिठा हाबा बिचु' मनाते हैं । इसे 'मिदि दिगे दावेवा' भी कहते हैं । इसमें पिठा बनाते हैं, पिठा और चुजे परिवार के मृतकों के नाम चढ़ाने के बाद ही लोग एक दूसरे के घर जाकर पिठा खाते हैं ।

इसके पश्चात् इस दिन युवक-युवतियाँ एक साथ मिलकर आम खाने की प्रथा को निभाते हैं। इस प्रकार वैशाख के पूरे महीने में ही बिहु मनाया जाता है।

'कातिय मेच्चु' कार्तिक मास शुरू होने के पहले ही दिन मनाया जाता है। इस मेच्चु में घर के कोई व्यक्ति चाहे पुरुष हो या महिला संध्या-समय सफेद वस्त्र परिधान कर पवित्र मन से अपने खेतों में दीप प्रज्वलित करते हुए खेती नष्ट न होने की कामना करते हैं। साथ ही घर की उन्नति, सु:ख-शान्ति के लिए चारों ओर दीया जलाते हैं। उस दिन तुलसी पौधे के नीचे दीया जलाकर तुलसी माता से आशीर्वाद लेते हैं।

'केमाचि मेच्चु' अर्थात् माघ बिहु खेती समाप्त होने के बाद मनाया जाता है। बिहु के एक महीने पहले से ही गाँव के सभी लोग मेजि जलाने के हेतु एक जगह लकड़ी इकठ्ठा करते हैं। जिस प्रकार बहाग बिहु में 'थिरी दुबोबा बिचु' मनाया जाता है, उसी प्रकार माघ बिहु में भी मनाते हैं। यह बिहु भी माघ महीने के प्रथम गुरुवार से शुरू होता है। इस बिहु में औरतें या युवतियाँ एक हफ्ते के पहले से ही अनेक प्रकार के लड्डू, पिठा आदि बनाते हैं।

देउरी समाज में मेजि जलाने की प्रथा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। देउरी समाज में गाँव के सभी लोग एक साथ मिलकर मेजि जलाते हैं। इसे 'मेजिंग जिदुवा' कहते हैं। मेजि के पास भेला घर का निर्माण करते हैं और अगले दिन से ही लोग नृत्य गीत करते हुए पूरी रात गुजार देते हैं। सभी लोग मन के दुख-दर्द को सुबह मेजि जलाते समय उसमें दहन कर देते हैं और जीवन भर सु:ख या आनन्द की कामना करते हैं। इसके बाद ही 'मरालेबा' बिचु का पालन करते हैं और लोग बिहु खाने के लिए एक दूसरे के घर जाते हैं।

इस प्रकार देखा जाए तो असमीया समाज की तरह ही देउरी समाज में भी तीनों बिहु बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। परन्तु देउरी संप्रदाय में बहाग और माघ बिहु का प्रारंभ महीने के प्रथम बुधवार से होता है और 'थिरी दुबोबा', 'मरालेबा' आदि मनाये बिना बिहु सम्पन्न नहीं होता। साथ ही परिवार के किसी व्यक्ति की मृत्यु होने पर या परिवार में किसी बच्चे के जन्म होने पर बिहु के पालन नहीं किया जाता है, क्योंकि देउरी समाज में इसे 'चुवा चाबा' (अपवित्र) माना जाता है। परन्तु कुछ दिनों के पश्चात् पवित्र होकर किसी गुरुवार या रविवार को बिहु मनाना अनिवार्य होता है। इसलिए देउरी बिहु को 'मने पता बिहु' अर्थात् जब चाहे मनाये जानेवाले बिहु भी कहते हैं।

संपर्क-सूत्र :
ई-मेइल : jundeori21@gmail.com